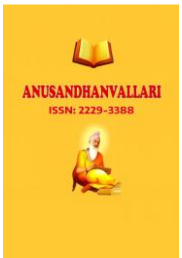


Anusandhanvallari
*Vol 2024, No.1*
*August 2024*
*ISSN 2229-3388*

# अजंता गुफाओं की भित्ति चित्रकला : विशयवस्तु और तकनीकी विशलेशण

**प्रवीन कुमार**

टीचिंग असिस्टेंट, दृ**श**य कला विभाग महर्शि दयानन्द वि**श**वविद्यालय, रोहतक

Email : parvin.rp.varts@mdurohtak.ac.in

**शोध सार**

अंजता भाब्द सुनते ही हमारे सामने एक मोहक दृ य उपस्थित हो जाता है। सौंदर्य का सपना–सूनी घाटी में छिपी गुफाएं और एक बहता झरना। ये गुफायें इसीलिए खोदी गई थी किपवि बौद्ध सन्यासी दुनिया की आपाधापी से दूर रहकर वहाँ साधना कर सकें। अजन्ता में कुल तीस गुफायें है जिनका निर्माण पाँच राजवं ों – आन्ध्र–सातवाहन, चालुक्य, वाकाटक, कुशाण एवं गुप्त काल में हुआ था। अजन्ता की प्रत्येक गुफा में मूर्तियां, स्तम्भ तथा द्वार काटे गये है और भितियों पर उतम चित्रकारी की गई है। अजन्ता के भितिचित्रों में प्लास्टर पर टेम्परा पद्धति (फ्रेस्को सेंको) से चित्रण किया गया है। अंजता के चित्रों में कलाकारों की चित्रण–निपुणता, तकनीकी समझ, भावात्मक अभिव्यक्ति और रंग योजना की श्रेश्ठता स्पश्ट्रूप से परिलक्षित होती है। यही कारण है कि खनिज रंगो के प्रयोग से बनाये गये जयादातर चित्रों की आभा फिकी नही पड़ी है। रंग अमिश्रित और चमकीले है। चित्र तरोताजा नजर आते है। इन चित्रों की विशयवस्तु धार्मिक, नैतिक, दा निक और मानव जीवन से जुड़ी हुई है। अंजता गुफाओं की कला न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक दृश्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह तकनीकी दृश्टि से भी अद्वीतीय और श्रेश्ठ मानी जाती है।

मूल भाब्द :– अंजता, भावात्मक, टेम्परा, विशयवस्तु

भोध का उदेशय :–

1. अंजता चित्रों की विशयवस्तु को समझना।

Anusandhanvallari
*Vol 2024, No.1*
*August 2024*
*ISSN 2229-3388*

2. चित्रों में प्रयुक्त चित्रण तकनीक का अध्ययन करना।
3. बौद्ध द नि और सांस्कृतिक संदर्भों की प्रस्तुती को समझना।
4. यह स्पश्ट करना की प्राचीन भारतीय कलाकार तकनीकी दृश्टि से कितने दक्ष और सृजन ील थे।

**भोध की पद्धति :–**

यह शोध साहित्यिक विश्लेषणात्मक विधि पर आधारित है। विभिन्न पुस्तकें, आलेख, शोध ग्रंथ, तथा प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई है।

भारत में बौद्ध कला की महान विरासत भिति चित्रों के रूप में अजंता की गुफाओं में भिति चित्रों के रूप में उच्चतम कोटि के उदाहरण है। विभिन्न विद्वानों ने अजन्ता की कला का अध्ययन कर उसे विश्व की कलाकृतियों के संदर्भ में देखा है। चित्रो का मुख्य विषय 'बुद्ध का वास्तविक जीवन' तथा उनके 'पूर्व जन्म की कथाओं' (जातक कथाओं) का चित्रण है।

सहाद्री पर्वतमाता की पहाड़ीयों में स्थित अंजता की विश्व प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिला से 101 किलोमीटर उत्तर–पूर्व दिशा में है। 'महामयूरी' नामक ग्रन्थ में ''आजिताञजेय'' नामक स्थान का उल्लेख है। अंजता की गुफाओ से कुछ किलोमीटर की दूरी पर ''अजिष्ठा'' नाम का गांव है, जिसका मूल उच्चारज ''अजिस्ठा'' है। इसी नाम के आधार पर ही वर्तमान में अंजता कहा जाने लगा। घोड़े की नाल आकार (अर्द्धवृताकार) की ये गुफाएँ वर्गुना नदी घाटी के बॉए छोर पर एक आग्नेय चट्टान को काटकर बनाई गई है इन गुफाओं को ऊपर से नीचे की दिशा में तराशा गया है। जिसके निष्पादन में 8 शताब्दियों का समय ;2nd Cent. B.C to 7th Cent. A–D) लगा।

अजंता की गुफाओं की खोज 1819 ईस्वी में ब्रिटिश सेना के एक अधिकारी 'जॉन स्मिथ' द्वारा की गई थी। अजन्ता गुप्तकालीन कला आवास है। स्थापत्यकला, मूर्तिकला तथा चित्रकला का सुन्दर समन्वय ''अजन्ता'' ने देखने को मिलता है। भारतीय चित्रकला का प्रथम

Anusandhanvallari
*Vol 2024, No.1*
*August 2024*
*ISSN 2229-3388*

उत्थान बौद्धकाल से ही माना आता है। अजन्ता की गुफाओं में चित्रण का एक मात्र उद्देश्य बोधिसत्व अर्थात बुद्ध के पूर्वजन्म सम्बन्धी कथाओं का चरित्र–चित्रण करना था। ये चित्र बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए प्रेरणादायक थे। बौद्ध भिक्षुओं ने अपने धर्म का प्रचार बुद्ध–जीवन सम्बन्धी घटनाओं के द्वारा किया है।

**अंजता की गुफाओं को दो भागों में विभाजित किया गया है :–**

1. चैत्य गुफाएँ
2. बिहार गुफाएँ

चैत्य गुफा बौद्ध भिक्षुओं के साथ–साथ उपासक एवं उपासिकाएँ पूजा करती थी। इसलिए वह अधिक लंबी होती थी और उनके अंतिम छोर पर एक स्तूप होता है जिसके चारों और पद्क्षिणा करने भर का स्थान होता था वंहा से दवार तक दोनों और खंभों को पंक्ति रहती है। गुफा संख्या 19 वंहा की सबसे बड़ी चैत्य गुफा है उसका द्वार बड़ा भव्य है। बिहार गुफा भिक्षुओं के रहने और अध्ययन करने के लिए होती है।

चैत्य गुफाएँ 9 वीं, 10 वी एवं 26 वीं है। भोश सभी बिहार गुफाएँ है। एक से 18 तक की गुफाओं में मुख दक्षिण दिशा की और शेष के पूर्व दिशा की ओर है। अंजता की प्रायः सभी गुफाओं के स्पाट स्थल चित्रों से सुसज्जित रहे होंगे लेकिन अब केवल मध्यभाग के चित्र सुरक्षित है। और वह भी मुख्य रूप से मात्र छः गुफाओं

1, 2, 9, 10, 16 एवं 17 के चित्र काफी सुरक्षित रह पाये हैं।

धार्मिक दृष्टि से गुहा मंदिर क्र० स० 8, 9, 10, 12 और 13 हीनयाद काल की है। बाकी गुफाएँ महायान काल की है।

अंजता की चित्रकला का सबसे बड़ा हिस्सा जातक कथाओं पर आधारित है, जो भगवान बुद्ध के पूर्वजन्मों की कहानियाँ है। जिनमें उन्होंने विभिन्न जीवों या मानव रूपों में जन्म लेकर

Anusandhanvallari
*Vol 2024, No.1*
*August 2024*
*ISSN 2229-3388*

करुणा, त्याग, प्रेम, और सत्य की शिक्षा दी, बौद्ध धर्म से संबंधित अनुष्ठानों, ध्यान करते भिक्षुओं, स्तूपों और बिहारों का चित्रण भी इन भित्तिचित्रों में किया गया है।

अंजता में सभी चित्र सांमजस्य पूर्ण ढंग से रचे गये हैं, जहाँ कथा, पात्र और पृष्ठभूमि में पूर्ण तालमेल है, अंजता की चित्रकला तकनीक में यह सिद्ध किया की प्राचीन भारत में चित्रकला केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि वैज्ञानिक एवं रचनात्मक दृष्टिकोण से भी उन्नत थी, अंजता के चित्रों की विषयवस्तु एवं तकनीक आज भी कला इतिहास में अध्ययन और संरक्षण का केंद्र बिंदु बनी हुई है।

विश्यवस्तु – आलंकारिक आलेखनों को छोड़कर अपना बौद्ध धर्म का सृजन केन्द्र था।

अंजता के चित्रो को 'वाचस्पति गैरोला' ने 'भारतीय चित्रकला' नामक अपनी पुस्तक में तीन भागों में बाँटा है। प्रथम श्रेणी में "आलंकारिक" चित्रों को रखा है। जिसमे मुख्य रूप से आलेखन बनाये गये हैं। इनमें फूल–पतियाँ, कलियाँ, कमल, दल, वृक्ष, पशु–पक्षी, किन्नर, राक्षस, नाग, गरुण, गन्धर्व, अपसरायें आदि द्वारा आलेखनों को संयोजित किया गया है।

द्वितीय श्रेणी 'रूप भौतिक' है। जिसने भगवान बुद्ध के दार्शनिक एवं अध्यात्मिक स्वरूप को चित्रित किया गया है। इसमें बुद्ध के जीवन के सभी पहलुओं को, जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन चित्र को उभारा गया है। जैसे – बुद्ध का जन्म, विवाह, गृह–त्याग इत्यादि धटनायें।

तृतीय श्रेणी में "जातक कथाओं" को रखा है। इसमें जातकों से अनुबद्ध अनेक प्राचीन कथाओं का चित्रण हुआ है। जे भगवान बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं का कथा के रूप में प्रस्तुतीकरण करते है। जैसे – ब्राह्मण जातक, शिवि जातक, धदन्त जानक, वेस्सान्तर जातक, हरित जातक आदि। चित्रों में खनीज रंगों द्वारा चित्रण हुआ है। जिसमें सफेद, लाल, पीला, भूरा, नीला और हरे रंगों का प्रमुखता से प्रयोग होता दिखाई देता है।

अंजता के चित्रो में लेख भी है जिनमें दानदाताओं के नाम का उल्लेख भी मिलता है।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

महायान परंपरा के चित्रों में विषय वैविध्य तथा कला भौश्ठव है। चित्रों में बुद्ध से संबंधित धार्मिक दृश्यों की अधिकता है। बुद्ध से जीवन से संबंधित जिन घटनाओं को अंजता में चित्रित किया गया है, वे हैं : मायादेवी का स्वपन्न (गुफा क्रम 2, 16), सिद्धार्थ का जन्म (2), ऋषि असित का भविष्य कथन (16), सिद्धार्थ की शिक्षा (16) सुजाता (16), मारधर्षण (1, 6, 16), राजगृह की यात्रा (16), यशोधरा एवं राहुल सहित बुद्ध (17), बुद्ध का तुशित स्वर्ग से उपदेश (16, 17) आदि। गुफा क्रम 16 में बुद्ध के जीवन से संबद्धधित अधिक संख्या में बने हैं।

बुद्ध के कपिलवस्तु आगमन के समय राहुल के पीछे खड़ी यशोधरा दान मांगने के लिए प्रेरित करती है बुद्ध भीक्षपात्र बढ़ाते हुए उन्हें धर्म में दीक्षित करने का प्रस्ताव रखते हुए प्रदर्शित है। विषयानुरूप रंगों का प्रयोग, भावप्रधान चेहरे तथा सुंदर शरीर संरचना ने इस चित्र को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया है।

अजंता के चित्रों का लोकप्रिय विषय है बुद्ध के पूर्व जन्म (जातक कथाओं) से संबंधित दृश्यों का रुपायन। इन चित्रों में बोधिसत्व को मानव, पशु एवं पक्षी योनियों में जनकल्याणार्थ जन्मा दिखलाया गया है। मानव योनि से संबंधित चित्रणों में उल्लेखनीय है महाजनक जातक (गुफा स० 1) विधुर पण्डित जातक (2), पूर्णावदान चित्रों जातक (2), विश्वांतर जातक (17), भयाम जातक (17), हस्ति जातक (16,17) इत्यादि इन जातक कथाओं की विषयवस्तु से व्यक्त है कि अजंता के चित्रकारों ने गंभीर और दार्शनिक विषयों का चयन चित्रण के लिए किया है।

अजन्ता तत्कालीन जीवन का प्रतिरूप है। गाँव और नगर, महल और झोपड़ी, समुद्रों और यात्राओं का संसार अजंता की इन गुफाओं में दृष्टिगोकार है। भितियों पर प्रकृति के विविध अवयवों का आलेखन जलचर एवं नभचरों से गुथा पड़ा है। जुलुस के जुलुस, हाथी–घोडे व अन्य पशु–पक्षी इस प्रकार के चित्रों में प्रदर्शित हैं, अन्य चित्रों में निकृष्ट बौने, यक्ष, द्वारपाल, देवदत, यक्षिगियो, गणिकाएँ आदि अनगिनत पात्रों को लावण्यमय रूप में रेखांकित किया है।

अजंता के चित्र एक धर्म विशेष तक ही सीमित नहीं रहे बल्कि विभिन्न समुदायों की कला के रूप में व्यापक रूप धारण कर चुके हैं। विषय धार्मिक होते हुझे भी जीवन और संसार के लिये ये चित्र महत्वपूर्ण साबित हुये हैं। 'झूला झूलती राजकुमारी', 'मरती राजकुमारी' तथा 'नृत्य करती बालाओं' का अंकन ही नहीं, वरन कई अन्य सांसारिक पक्षो का यहाँ अंकन हुआ है। यहाँ श्रृंगार तथा जन–जीवन संबंधी विषयों की उपेक्षा नहीं हुई है।

अजंता की कला चित्रकारों की स्वतंत अनुभूति और अभिव्यक्ति से प्रेरित है

**वस्तुतः** अजन्ता की चित्रकला बौद्ध धर्म, ज्ञान, भक्त, दया, प्रेम, करुणा के भावों से ओत–प्रोत प्रकृति का भंडार है, प्रकृति का प्रत्येक कण यहाँ के चित्रों में अन्तर्निहित है।

### अंजता चित्रो का तकनीकी विश्लेषण

अजंता की गुफा–चित्रो का निर्माण टेम्परा तथा प्रेस्को विधि के समन्वय से हुआ है। अजन्ता के भिति–चित्रण में चुने के स्थान पर पहले प्लास्टर की पर्त पर खड़ीया, गोबर आदि बारीक गारे को गुफा की खुरदरी दीवार पर लगा दिया जाता था। इस मिश्रण को कई दिनों तक अलसी के पानी में मौड़कर फुल्ने दिया जाता था। इसमें उर्द की दाल का पानी भी डाला जाता था। कभी–कभी छत के भिति में धान को भूसी भी मिलाई जाती थी। इस प्लास्टर की तह पौन ईच से लेकर एक ईंच तक मोटी होती थी। इसके ऊपर एक पतला सफेद प्लास्टर का लेप किया जाता था। इस प्रकार प्रत्येक गुफा पलास्टर से लेपी जाती थी और चित्रित की जाती थी। खुरदरे पत्थर पर प्लास्टर का मसाला चट्टानों की बारीक रेत, चुना मिट्टी, गोबर, भूसा, वनस्पतियों के रेशे आदि के साथ मुद्ग काढ़े, गोंद अथवा अन्य चिपकाने वाले पदार्थ मिलाकर बनाये जाते थे। कहीं–कहीं मसाले की दो परत भी चढ़ाई जाती थी। थोड़ा गीला रहने पर प्लस्तर के ऊपर चुने का लेप चढ़ाया जाता था। चित्रों की चमक देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है की चूने की सतह की घुटाई भी की जाती थी। इसके बाद चित्रों को खनिज रंगों द्वारा ही बनाया जाता था। ताकि वे चूने के क्षारात्मक प्रभाव से अपना अस्तित्व

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

न खो बैठें। रंगों में सफेद, लाल, पीला और विभिन्न भूरे रंगों का प्रयोग हुआ है। इसके अतिरिक्त नीला (लेपिस लाजुली) और गन्दे हरे (संग सब्ज टेरावर्ट) रंग है। सफेद रंग अपारदर्शी है और चुने या खड़ीया से बनाया गया है। लाल तथा भूरे खनिज रंग हैं। हरा रंग एक स्थानीय पत्थर से बनाया गया है। लेपिज लाजुली रंग फारस से आयात किया जाता था, शेष रंग स्थानीय थे। इस शैली में जिन रंगों का स्वतंत्रता से प्रयोग किया गया है। उसमें सफेद, लाल, भूरे से बने विभिन्न हल्के तथा गहरे रंग हैं। पीला रंग लिये पीली मिट्‌टी या रामरज पीले रंग का प्रयोग है। लाल के लिए गेरू व हिरैंजी, काले के लिए काज़ल, सफेद रंग प्रायः अपारदर्शी है और चीनी मिट्टी, जिप्सम, चुने या खड़ीया से बनाया गया है, जो रंग नीला रंग फारस से आयात किया हुआ 'लेपिस लाजुली' (Lapis Lazuli) हैं जो एक बहुमुल्य पत्थर को घिस कर बनाया गया है। इन रंगों को गोंद अथवा सरस (वज्रलेप) के साथ घोलकर तैयार किया जाता था।

हरिषेण के समय की अजंता की चित्रकला ने तकनीकी, संरचना, दृश्य नियोजन, भावाभिव्यक्ति आदि सभी दृष्टियों से कला की ऊंचाईयों को छुलिया। कुशलतापूर्वक तैयार समतल धरातल पर विविध अभिप्रायों का रेखांकन एवं रंगों का भराव विषयानुरूप हुआ है। तुलिका पर दबाव से गहरी या हल्की रेखाएं, इच्छित प्रभाव के अनुरूप बनीं। चौड़ी सघन गहरी रेखाएं स्वयं में एक प्रकार बन गई। पतली, संकुचित एवं तीक्ष्ण रेखाएं लिखावट की विशेषता है। रेखाओं में छाया वैविध्य भी दर्शनीय है। गतिमान एवं सजीव लंबी तथा छोटी रेखाओं के संयोजन से बने मानव पशु—पक्षी आकृतियां एंव अलंकरण कलात्मक है। पद, विषयवस्तु तथा स्वभाव के अनुरूप आकृतियों में भाव का संजोजन हुआ है। स्त्री आकृतियों की संरचना में सौन्दर्य पर विशेष बल दिया गया है। शारीरिक सौन्दर्य से प्रतीत होता है कि उनका रूपायन साहित्यिक उपमाओं के अनुरूप किया गया था। स्त्री और पुरुष आकृतियों के सौन्दर्य प्रधान रूपों की बहुलता व्यक्त करती है कि सम्भवतः उनकी अभिव्यक्ति वास्तविक रूप में नहीं हुई थी। वे मानक रूप में बने हैं।

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
August 2024
ISSN 2229-3388

विविध प्रकार के महल, चौपाल, नगर द्वार, पर्णकुटि, मंदिर, स्तूप, बिहार से तत्कालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश पड़ता है। इनमें चित्रित विविध वर्गों एवं भाव भंगिमाओं की आकृतियों तथा परिवेश से तत्कालिन उच्च कुलीय एवं निम्नकुलीय जीवन–पद्धति का बोध होता है।

अजन्ता चित्र शैली में सुघड़ रेखाओं की सजीवता, रंगों की अनुरूप अभियोजना, सूक्ष्म छायांकन, लिआयामी रुपायन, रमणीय आकृतियाँ, भावभिव्यक्ति, आयतन, लावण्यता, संयमित और असरदार संरचना आदि का सफल निरुपण हुआ है। कथा बिना किसी व्यवधान के एक क्रम में रुपायित है। विभाजक रेखाओं द्वारा विविध प्रसंगों या विषयों को अलग करने का प्रयत्न नहीं किया गया है। कुछ स्थलों पर इस कार्य हेतु भवनों या विषयों का चित्रण हुआ है। सामान्य तथा एक कथा दूसरी कथा में वीलीन हो जाती है। इन कथा चित्रों का विस्तारण ऊपर और नीचे, क्षैतिज और उर्ध्व दिशाओं में हुआ। चित्रकार का ध्यान प्रमाण, भाव, और वर्णिक अंग पर था। लंबे ब्रश संचालन ने आकृतियों को सौन्दर्यामयी आभाप्रदान की तथा छोटे ब्रश सिंह के दक्ष प्रयोग से भारीर के अंगों में उभार प्रकट हुआ। अपनी शिखर पर पहुँची अजंता को संपूर्ण चित्रकला में भेद और विकास की प्रक्रिया स्पष्ट दिखाई देती है। अनेक विशेषताओं वाली अजंता की चित्र ैली पर कुछ विद्वानों को छोड़कर, अधिकांश विद्वान गुप्तयुगीन 'कलासिक्ल कला शैली' के साथ–साथ आंध्र की अमरावती और नागार्जुन कोण्ड कला शैली के प्रभाव को स्वीकार किया है। उनका विचार है कि अजंता और बाघ की विशिष्ट नीले रंग की योजना आदी की समानता से प्रतीत होता है कि उनका प्रथम प्रयोग गुप्त कला केंद्र बाघ में हुआ होगा और वहां से वह गुप्त कला के अन्य लक्षणों सहित वाकाटक क्षेत्र में गई होगी। अजंता की चित्र भाौली ने अन्य स्थलों का कला शैली का मार्ग भी प्रशस्त किया।

## संरक्षण और वर्तमान स्थिति

समय पर उचित संरक्षण न मिलने के कारण अजन्ता के चित्र सुरक्षित नहीं रह पाये। आरम्भ में न तो हैदराबाद के निजाम ने इनकी सुरक्षा में रूचि ली और न ही इनकी देखभाल के

लिए अधिकारीयों ने अपने तुच्छ स्वार्थ के लिये चित्रो के मुख्य भाग को दर्शको को देते रहे। दूसरी और पक्षियों (चमगादड़ो, कबूतरों व अन्य जीव–जन्तुओं) के घोसले एवं साधुओं एवं अन्य महानुभावों द्वारा खाना पकाने के धुंआ आदि से चित्रों को काफी क्षति पहुंची व आम जनता ने भी जगह जगह चित्रो का खुरच दिया डाला। 'डॉ० बर्ड' जो मुम्बई मे पुरातत्ववेत्ता थे, ने भी मुम्बई संग्रहालय को लाभान्वित करने की दृष्टि से इसे क्षति पहुंचाई।

पुरातत्व विभाग ने 1903 से 1904 में मुख्य चित्रो के सामने जाली लगवाई व उचित सफाई भी करवाई गई। 1920 से 1922 ई० तक इटली के भिति चित्र विशेशज्ञों द्वारा रासायनिक उपचार से चित्रों को सादा करवाया गया और दरार की जगह प्लास्टर ऑफ पेरिस से भर दिया, जिससे प्लास्टर खण्ड, दीवार से गिर न जाये। केमिकल्स व वार्तिस के प्रयोग से चित्रों के सौदर्य में कमी आई है।

सन् 1908 में क्यूरेटर की नियुक्ति हुई व सन् 1956 में पुरातत्व विभाग ने गुफा चित्रों का कार्यभार खुद संभाला व अनेक यथासंभव कार्य किये चित्रों के संरक्षण के लिए। ब्राह्य प्रकाश–पुंज चित्रो की चमक कम न कर दे इसके लिए दर्शको को हिदायत दी जाती है कि अपने कैमरा या फोन की टार्च (Flash light) बंद करके रखें फोटो लेते समय।

सभी प्रकार की क्षति से बचते हुये कला साधना के ये अवशेष अजन्ता में सुरक्षित है। इनकी अनेकों प्रतियां जनता के समक्ष पहुँच चुकी है। सन् 1976 ई० में शोध व लेखों के आधार पर 'अजन्ता म्यूरल' (Ajanta Murals) नामक पुस्तक प्रकाशित की गई थी। (रीता प्रताप) पृ० 63

इन गुफाओं के आलोकिक चरित्रो को देखकर आनंदित होते हुए, उन महान चित्रकारों की श्रद्धा को नमन है जिन्होंने पूर्ण निष्ठा व ईमानदारी से चित्रण किया। इतना महान व श्रेश्ठ कार्य करने के बाद भी किसी भी कलाकार ने अपना नाम तक नहीं लिखा, प्रत्येक भारतीय को उन पर गर्व है।

**निश्कर्श :–** अजंता गुफा चित्रों के प्रभावों से न तो भारतीय कला अछुती रही और न ही

कलाकार अपने आप को अछुता रख पाया चाहे वो कलाकार मध्यकाल, अधुनिक व समकालीन कलाकार ही क्यों न हो, किसी न किसी रूप में उनके कलाकार्यों में अजन्ता का प्रभाव साफ तौर पर देखा व अनुभव किया जा सकता है। अजंता के चित्रो ने भारतीय कला को वि  वपटल पर दुनिया को आश्चर्य चकित किया व भारतीय कला को श्रेष्ठ पद पर पहुँचाया।

अजंता की चित्रकला भारत की प्राचीन भितिचित्र कला की सबसे उत्कृष्ट उपलब्धि मानी जाती है, साथ ही इसमें सजावटी कौशल, भावनात्मक अभिव्यक्ति तथा प्राचीन भारतीय सौंदर्यशास्त्र का श्रेष्ठ उदाहरण है।

अंजता गुप्तओं की चित्रकला केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय चित्रकला की संवेदनशीलता, तकनीकी दक्षता और सौंदर्यबोध का शिखर है। विषयवस्तु में गहराई और कलात्मक उत्कृष्ठता के कारण इसका भारतीय चित्रकला में अति विशिष्ठ स्थान है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची**

1. 'प्रताप' रीता, ''भारतीय चित्रकला एवं मुर्तिकला का इतिहास'', राजस्थान हिंदीग्रंथ उकादमी, जयपुर, तृतीय संस्करण 2013
2. 'अग्रवाल ए आर० ए० ''भारतीय चित्रकला का वैभव (प्रागैतिहासिक काल सेवर्तमान तक) रूपसागर, स्वाति पब्लिके  ान, दिल्ली 110005
3. 'वाजेपेयी', 'उॉ० सन्तोश कुमार' गुप्तकालीन मुर्तिकला का सौन्दर्यात्मक अध्ययन 'ईस्टर्न कुक लिंकर्स, दिल्ली, भारत
4. 'राजन' 'डॉ० राजेन्द्र प्रसाद' मध्य भारत की चित्र एवं मुर्तिकला (चनदेलों के सन्दर्भ में), स्वाति पब्लिके  ान्स दिल्ली
5. 'P. jamkhedkar', 'Arvind', Monumental legacy series Ajanta, Oxford University Press
6. 'कुमार सिंह' 'अरविन्द', 'प्राचिन भारतीय मुर्तिकला एवं चित्रकला (पाशाणकाल से गुपतकाल), मध्यप्रदे  ा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल

7. ‘प्रका ा’ ‘डॉ० सत्य’ ‘पि चमी भारत की बौद्ध गुफाएँ, ‘कला प्रकासन, वी० 33/33ए–1, न्यू साकेत कालोनी, बी० एच० यू० वाराणसी–5
8. ‘‘कृश्णदास राय’, ‘अजंता की चित्रकला, मनन–7
9. Archaeological Survey of wastern India Budha Rock-Temples of Ajanta, Their Paintngs and sculpturs burgess. M.P.A.S, F.R.G.S, mem.De.La.Soc.Ariat Printed by border of government at the government central Press, 1879
10. ‘रेनू’, डॉ ‘अरविन्द कुमार भटनगर’, एलोरा और अजंता वास्तुकला महतव का प्रतिबिंब glotus Journal of Progressive Education a Refereed Research journal, vol 8, no.1, Jan-June 2018, ESSN: 2231-1335
11. मंजूयादव, अजंता की चित्रकाला, भाोधकर्त्ता, दृ यकला विभाग, इलाहाबाद वि वविद्यालय, 2018 IJSRSET! Vol 4, Issues, Print ISSN: 2395-1990/ onlion ISSN: 2394-4099 international journal of scientific Research in science, Engineering and Technology.